

प्रेस विज्ञप्ति

राज भवन, राँची

दिनांक : 19 नवम्बर, 2025 :-

- (1) माननीय राज्यपाल श्री संतोष कुमार गंगवार आज चांडिल, सरायकेला-खरसावां में नवनिर्मित विवेकानंद केंद्र, कन्याकुमारी सेवा एवं प्रशिक्षण 'प्रकल्प भवन' के उद्घाटन समारोह तथा 'साधना दिवस' कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। उन्होंने कहा कि 'प्रकल्प भवन' का उद्घाटन चांडिल ही नहीं, बल्कि पूरे झारखंड-बिहार क्षेत्र में सेवा, संस्कार और समाज-निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह भवन मात्र एक संरचना नहीं, बल्कि सेवा, समर्पण और राष्ट्रधर्म की भावना पर आधारित एक जीवंत केंद्र है, जहाँ से समाज परिवर्तन की नई धारा प्रवाहित होगी। उन्होंने यह भी कहा कि आज 'साधना दिवस' है, जो केंद्र के संस्थापक एकनाथ रानाडे जी की जयंती को समर्पित है।

राज्यपाल महोदय ने युगपुरुष स्वामी विवेकानंद के प्रेरणादायी विचारों का उल्लेख करते हुए कहा कि विवेकानंद केंद्र का उद्देश्य आध्यात्म-आधारित मानव निर्माण है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह सेवा भवन युवाओं में चरित्र, नेतृत्व और राष्ट्रसेवा की भावना विकसित करने का प्रमुख केंद्र बनेगा।

उन्होंने कहा कि झारखंड की जनजातीय संस्कृति, प्रकृति-प्रेम और सामुदायिक सौहार्द राज्य की अनमोल धरोहर है। इस सांस्कृतिक विरासत को आधुनिक शिक्षा और कौशल विकास से जोड़ना समय की महती आवश्यकता है और इस दिशा में विवेकानंद केंद्र का चांडिल प्रकल्प महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा को “चरित्र निर्माण की प्रक्रिया” बताया था। उन्होंने केवल किताबी ज्ञान तक सीमित रहने की नहीं, बल्कि सत्यनिष्ठ, अनुशासित और आत्मनिर्भर युवा शक्ति के निर्माण की आवश्यकता बताई। उन्होंने केंद्र के कार्यकर्ताओं द्वारा ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा, संस्कार और सेवा कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि “नर सेवा ही नारायण सेवा”, भारतीय संस्कृति का श्रेष्ठतम आदर्श है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में “सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास” के मंत्र का उल्लेख करते हुए राज्यपाल महोदय ने कहा कि राष्ट्रनिर्माण, सेवा और संस्कार पर आधारित शासन व्यवस्था स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं के अनुरूप है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भवन भी इसी भावना को और सशक्त करेगा।

राज्यपाल महोदय ने युवाओं से अपनी संस्कृति और जड़ों से जुड़े रहते हुए आधुनिक ज्ञान, तकनीक और कौशल से स्वयं को समृद्ध करने का आह्वान किया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह 'प्रकल्प भवन' आने वाले वर्षों में मानव निर्माण, सांस्कृतिक जागरण और राष्ट्रीय चेतना का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनेगा।

(2) माननीय राज्यपाल-सह-झारखंड राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति ने जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षांत समारोह में विद्यार्थियों को उपाधि प्रदान की।

झारखंड की प्रतिभाशाली बेटियाँ विकसित भारत के संकल्प को साकार करेंगी, ऐसा विश्वास है- राज्यपाल

माननीय राज्यपाल-सह-झारखंड राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति श्री संतोष कुमार गंगवार ने आज जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय, जमशेदपुर के तृतीय दीक्षांत समारोह में संबोधित करते हुए कहा कि बेटियों की शिक्षा किसी भी समाज की वास्तविक प्रगति का आधार है। उन्होंने उपाधि प्राप्त सभी छात्राओं को हार्दिक बधाई दी और कहा कि यह सफलता उनके परिश्रम, अनुशासन और समर्पण का परिणाम है।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि इस विश्वविद्यालय की यात्रा एक इंटरमीडिएट कॉलेज से पूर्ण विश्वविद्यालय बनने तक महिला शिक्षा, सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन की प्रेरक कहानी है। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि विश्वविद्यालय की पूर्व छात्राएँ शिक्षा, प्रशासन, विज्ञान, उद्यमिता, कला और खेल सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान दे रही हैं।

माननीय राज्यपाल ने माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा नारी-सशक्तिकरण, बेटियों की शिक्षा, सुरक्षा और सम्मान के लिए चलाए जा रहे अभियानों विशेष रूप से 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', कौशल विकास एवं महिला उद्यमिता से संबंधित कार्यक्रमों का उल्लेख करते हुए कहा कि इनके सकारात्मक परिणाम पूरे देश में दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत की बेटियाँ आज विश्व-स्तर पर नए कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं और झारखंड की बेटियाँ भी इस दिशा में तेज़ी से आगे बढ़ रही हैं।

राज्यपाल महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि “दीक्षांत केवल शिक्षा का समापन नहीं, बल्कि जीवन की एक नई यात्रा का आरंभ है। आप जिस भी क्षेत्र में जाएँ, शिक्षा, न्याय, प्रशासन, विज्ञान, उद्योग या सामाजिक सेवा, आपकी सफलता मानवीय संवेदनाओं, नैतिक मूल्यों और जिम्मेदारियों से परिपूर्ण होनी चाहिए। उन्होंने छात्राओं को अनुशासन, निरंतर सीखते रहने की प्रवृत्ति और आत्मविश्वास को जीवन का आधार बनाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि अवसर स्वयं नहीं आते, उन्हें परिश्रम और संकल्प से हासिल करना पड़ता है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि राज्य के विभिन्न दीक्षांत समारोहों में “पदक प्राप्त करने वाली छात्राओं की संख्या लड़कों से अधिक देखना” राज्य की उभरती नारी-शक्ति का प्रमाण है।

राज्यपाल-सह-कुलाधिपति महोदय ने कहा कि राज्य के सभी विश्वविद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, नियमित कक्षाएँ, समय पर परीक्षाएँ और समयबद्ध परिणाम सुनिश्चित करना उनकी प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय महिला शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्टता का आदर्श केंद्र बने, इस दिशा में तेजी से प्रयास करें। उन्होंने सभी उपाधि प्राप्त छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि पूर्ण विश्वास है कि झारखंड की हमारी प्रतिभाशाली बेटियाँ 'विकसित भारत@2047' के संकल्प को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगी।

(3) माननीय राज्यपाल श्री संतोष कुमार गंगवार ने आज साकची, जमशेदपुर में आयोजित 'चतुर्थ बाल मेला-2025' कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि यह हर्ष का विषय है कि वर्ष 2022 में माननीय विधायक श्री सरयू राय जी की प्रेरणा से आरम्भ हुआ यह बाल मेला आज बच्चों के अधिकार, पोषण, शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति जन-जागृति का एक सशक्त मंच बन चुका है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय बाल दिवस (14 नवंबर) से विश्व बाल दिवस (20 नवंबर) तक आयोजित यह मेला बचपन की मासूमियत, उज्ज्वल उम्मीदों और भविष्य की संभावनाओं का उत्सव है।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि इस वर्ष विश्व बाल दिवस का विषय 'प्यार से पालन-पोषण - विश्व का नेतृत्व' बच्चों के लिए प्रेमपूर्ण, सुरक्षित और संवेदनशील वातावरण की अनिवार्यता पर बल देता है। उन्होंने बच्चों के अधिकारों और उनके समग्र विकास से जुड़ी वर्तमान चुनौतियों पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि झारखंड सहित कई राज्यों में कुपोषण, कम वजन और एनीमिया जैसी समस्याएँ अभी भी गंभीर हैं। उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश कुपोषण-मुक्त भारत की दिशा

में निर्णायक कदम उठा रहा है और झारखंड में भी इन प्रयासों को और अधिक गति देने की आवश्यकता है।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि बाल मेला केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि ऐसा बहुआयामी सामाजिक प्रयास है जो माता-पिता, शिक्षक, स्वास्थ्यकर्मी, जन-प्रतिनिधि, सामाजिक संस्थाएँ, कॉरपोरेट जगत, मीडिया और नागरिक समाज को एक साथ लाता है। उन्होंने कहा कि झारखंड की धरती जनजातीय संस्कृति और परंपरा से समृद्ध है। जनजातीय समाज की यह मान्यता कि “बच्चा केवल परिवार का नहीं, पूरे समुदाय का होता है”, दुनिया को सामुदायिक सहयोग और सामूहिक जिम्मेदारी का अमूल्य संदेश देती है। उन्होंने कहा कि राज्य के सुदूरवर्ती क्षेत्रों और विभिन्न विद्यालयों के भ्रमण के दौरान उन्होंने बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा, खेल-कूद की क्षमता, संगीत-नृत्य की स्वाभाविक समझ तथा प्रकृति के प्रति गहरी संवेदना देखी है।

माननीय राज्यपाल ने बालिका शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि एक शिक्षित बेटी ही शिक्षित परिवार और सशक्त समाज की आधारशिला है। उन्होंने कहा कि बच्चे केवल भविष्य नहीं, बल्कि आज की प्राथमिकता हैं। इसलिए सभी मिलकर ऐसा वातावरण

बनाएं जहाँ राज्य का हर बच्चा स्वस्थ, शिक्षित, सुरक्षित
और खुशहाल होकर आगे बढ़ सके।
